P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आर्य–आक्रमण के सम्बंध में अम्बेडकर के विचार और सामाजिक समावेशन

श्याम नारायण पाण्डेय
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

सारांश

औपनिवेशिक, विघटनकारी और पृथकतावादी अकादमीय परियोजना और योजना के अंतर्गत् विकसित किये गये विचार, मान्यताएं और सिद्धांत प्रायः यह प्रयास करते हैं कि समाज इनके प्रभाव के संक्रमण में रहे या विद्यमान समाज में सामाजिक समरसता, एकता और आपसी सामंजस्य स्थिर न रहने पाए। लम्बी दासता की विभीषिका का दंश झेल चुके भारतीय समाज में इस प्रकार के बौद्धिक प्रयोग स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। इन्हीं प्रयोगों में एक है 'आर्य–आक्रमण का सिद्धांत'(Aryan Invasion Theory) की रचना। इस सिद्धांत की रचना के पीछे उन विचारों ने ही कार्य किया जो भारतीय समाज को स्थिर व समावेशित रूप में देखना नहीं चाहते थे। अतः आर्यों के मूल का प्रश्न आज भी विवाद का है। पश्चिमी आधार को सत्य मानकर अनेक भारतीय विद्वानों ने आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत को सत्य माना। जबकि इस विचार से भिन्न मत रखते हुए अम्बेडकर ने आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत का खंडन किया व आर्य और मूल निवासी जैसे विभाजन को तथ्यहीन माना। अम्बेडकर का कहना है कि आर्यों के आक्रमण का सिद्धांत ब्रिटिश साजिश के तहत गढ़ा गया है। इस सन्दर्भ में उन्होंने अपने शोध अध्ययन का प्रकाशन अपनी पुस्तक "Who were the Shudras?" में किया है। अम्बेडकर के द्वारा आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत के विरोध में अकाट्य तर्क प्रस्तुत किया गया है। अपनी रचना *"The Untouchables : Who were they and why they Became Untouchables"* में मुख्यतः दो बातों का वर्णन किया है– पहला यह कि शूद्र मूलतः क्षत्रिय थे तथा उनके द्वारा ब्राह्मणों तथा ब्राह्मणवाद का विरोध करने के कारण ब्राह्मणों के द्वारा इनका उपनयन आदि संस्कार बंद कर दिया गया,जिस कारण वे कालांतर में शूद्र स्थिति को प्राप्त हुए। दूसरा, उनके अछूत स्थिति के सन्दर्भ में कारण तलाशते हुए अम्बेडकर इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि यायावर जीवन से स्थायी बस्ती बनाने के क्रम में जो संघर्ष उत्पन्न हुआ उसके परिणामस्वरूप पराजितों की स्थिति अछूतों की हो गयी। अम्बेडकर आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत से असहमति व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इस बात के लिए कोई ठोस आधार नहीं है कि यह माना जाय कि आर्य बाहरी तथा ऊँची जाति के लोग हैं तथा दलित स्थानीय और अनार्य हैं। वे चारों वर्णों को आर्य मानते हैं। उन्होंने आर्य और द्रविड़ के विभाजन को औपनिवेशिक षड्यंत्र बताया, जिसने भारत को क्षेत्रीय आधार पर उत्तर एवं दक्षिण तथा जातीय आधार पर उच्च (आर्य) और निम्न (मूल निवासी) वर्ग में विभाजित किया। इस सिद्धांत ने भारतीय समाज और इतिहास के एकात्म स्वरुप को छिन्न–भिन्न करने के प्रयास किया है। उत्तर बनाम दक्षिण का आन्दोलन हो या दलित बनाम सवर्ण आन्दोलन अथवा मूल निवासी आन्दोलन, इन सभी आंदोलनों का आधार आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत पर टिका है। अतः आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत के खंडन के साथ ही यह बात सिद्ध हो जाती है कि सभी भारतीयों का मूल एक ही है। अम्बेडकर के उपर्युक्त सिद्धांत द्वारा भारतीय समाज के समावेशी स्वरुप की पुष्टि होती हैं।

मुख्य शब्द : अम्बेडकर, आर्य, अनार्य, दस्यु, ऋग्वेद, पुनरुत्थानवादी, औपनिवेशिक, समावेशन।

प्रस्तावना

इतिहास केवल बीती हुई घटनाओं का संग्रह ही नहीं बल्कि किसी समाज और राष्ट्र के भविष्य–निर्माण की नींव भी होता है। अतः स्वाभाविक तौर पर इतिहास का राजनीति पर गहरा प्रभाव है। अनेक सत्ताओं का निर्माण और विध्वंस इतिहास के प्रभाव के कारण हुआ है। इस महत्ता को ध्यान में रखते हुए सत्तासीन ताकतों द्वारा सत्ता में बने रहने के लिए अनेक बार इतिहास को अपने

हितों के अनुरूप परिवर्तित करने या विकृत करने का प्रयास किया जाता है, जिससे कि ये ताकतें सत्ता में बने रहकर अपने हितों की पूर्ति कर सकें।

सत्तासीनों का उद्देश्य कभी समाज का संगठन हो सकता है तो कभी समाज का विघटन। अतः इतिहास को इन्हीं उद्देश्यों के अनुरूप स्वरुप प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। औपनिवेशिक ताकतों द्वारा भी सत्ता में बने रहने के लिए कुछ ऐसा ही कृत्य किया गया। ब्रिटिश जिस समय भारत में सत्ता प्राप्ति के लिए प्रयासरत थे उस समय उन्हें अनेक प्रकार की चुनौतयों का सामना करना पड़ रहा था। इन चुनौतयों में एक था– 'समाज का संगठित स्वरुप', जिसे तोड़कर ही औपनिवेशिक शक्तियां अपने उद्देश्य में सफल हो सकती थीं।[1]

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ब्रिटिश द्वारा इतिहास का सहारा लिया गया, जिससे कि भारतीय समाज को विघटित किया जा सके। आर्य–आक्रमण का सिद्धांत इसी पृष्ठभूमि में गढ़ा गया। इस सिद्धांत के माध्यम से उनके द्वारा दो उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया गया, पहला– समाज को स्थानीय बनाम बाहरी (आक्रमणकारी) में विभाजन व दूसरा– अपनी सत्ता का औचित्य सिद्ध करना। इसका विस्तृत विवरण आगे के पृष्ठों में दिया गया है।

आर्य–आक्रमण का सिद्धांत

आर्य–आक्रमण का सिद्धांत वर्तमान समय में अत्यंत विवादित सिद्धांत है। प्राचीन इतिहास से सम्बंधित इस सिद्धांत की यह मान्यता है कि पंद्रह सौ ई.पू. के आस–पास भारतीय क्षेत्र पर 'आर्य' नामक प्रजाति का आक्रमण हुआ जो मूलतः उत्तरी यूरोप से आये थे। ये शारीरिक और सांस्कृतिक रूप से भारतीय निवासियों से बहुत भिन्न थे। आर्यों ने अपने आधिपत्य को बनाये रखने के लिए पहले से स्थापित भारतीय व्यवस्थाओं में अनेक परिवर्तन किये, जिससे कि मूल भारतीयों में उनका विलय न हो जाये। इस हेतु सबसे महत्वपूर्ण अस्त्र था जाति–व्यवस्था का निर्माण; जो कि आज भी हिन्दू–धर्म, समाज और इतिहास का महत्वपूर्ण लक्षण है।[2]

19वीं शताब्दी के मध्य तक भारतीयों की यह मान्यता थी कि वे मूल रूप से भारतीय हैं, ऐसे में आर्य–आक्रमण सिद्धांत का उद्भव न सिर्फ कौतुहल का विषय था बल्कि एक क्रांतिकारी कदम भी था, क्योंकि इसने भारतीयों की मूल मान्यता को चुनौती प्रदान की। अतः इसे स्वीकार कर पाना भारतीयों के लिए मुश्किल भरा था। इस सिद्धांत ने न सिर्फ भारतीय बल्कि पश्चिमी अकादमिक जगत के लिए भी अध्ययन का एक नया विषय उपलब्ध करा दिया ।[3]

सिद्धांत के प्रतिपादन का आधार, उद्देश्य एवं प्रभाव

आर्य–आक्रमण सिद्धांत के प्रतिपादन का प्रथम आधार था– भारतीय भाषा 'संस्कृत' और यूरोपीय भाषाओं के बीच समानता। औपनिवेशिक काल के दौरान यूरोपीय विद्वान इस प्रकार की 'विजेता और पराजितों के बीच भाषाई समानता' को देखकर भौचक रह गये और इस आधार पर उन्होंने दोनों भाषाभाषियों के मूल में समानता देखने का प्रयास करना शुरू किया। अंततः भाषाई–समानता पर आधारित अपने शोध के माध्यम से यूरोपीय जाति की श्रेष्ठता को परिभाषित करने में उन्हें अप्रत्यक्ष सहायता मिली।

यद्यपि औपनिवेशिक काल के शुरुआती दौर में ईस्ट इंडिया कंपनी ने किसी वैचारिक या नृजातीय श्रेष्ठता को ध्यान में रखे बिना भारत में अपना शासन स्थापित करने का प्रयास किया किया, परन्तु धीरे–धीरे जटिलता बढ़ती गयी। कालान्तर में, भारत में युद्ध और प्रतिरोध में हो रही लगातार वृद्धि के कारण अब यह आवश्यक हो गया था कि ब्रिटिश भारत में अपनी उपस्थिति को उचित ठहराने के लिए 'यूरोपीय नृजातीय श्रेष्ठता के सिद्धांत' का विकास करें। इसके माध्यम से ब्रिटिश भारतीयों में ऐसी मानसिकता विकसित करना चाहते थे जिससे भारतीय यह स्वीकार कर सकें कि ब्रिटिश प्रजाति श्रेष्ठ है तथा उनका उद्देश्य भारतीयों का शोषण नहीं बल्कि उन्हें सभ्य बनाना है और ऐसा करने के लिए उनका यहाँ बने रहना जरुरी है।[4]

1857 ई. के बाद ब्रिटिश द्वारा भारतीय शिक्षा–प्रणाली में एक व्यापक परिवर्तन किया गया, जिसका उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो ब्रिटिश–शासन के प्रति वफादार हो। इसके अंतर्गत 'आर्य–आक्रमण का सिद्धांत' एक महत्वपूर्ण अस्त्र था जो ब्रिटिश–शासन को भारत में उचित ठहराने में सहयोगी हो सकता था। इस सिद्धांत के माध्यम से ब्रिटिश ने 'आर्य' को प्राचीन भारत की एक उच्च एवं श्रेष्ठ प्रजाति के रूप में स्थापित किया जो कि उत्तरी यूरोप से भारत की ओर पलायन किये थे। इस सिद्धांत के माध्यम से ब्रिटिश ने यह बताने का प्रयास किया कि 'आर्य अपने साथ एक उच्च संस्कृति, भाषा और श्रेष्ठ दर्शन लेकर भारत आये थे ताकि भारत के मूल निवासियों अर्थात् द्रविण लोगों को सभ्य बना सकें। अतः जो कुछ भी भारत में श्रेष्ठ है वह इन आर्यों की देन है। यदि भारत को पुनः महान बनाना है तो नवागंतुक आर्यों अर्थात् यूरोपीय लोगों को सत्ता में बने रहना आवश्यक है।[5]

आर्य–संस्कृति और स्वयं के बीच इस प्रकार की सांस्कृतिक एकता और जुड़ाव को दर्शाकर ब्रिटिश अपने को महान आर्य संस्कृति का उत्तराधिकारी सिद्ध करना चाहते थे ताकि वे स्वयं के शासन को उचित सिद्ध कर सकें। जिससे यह धारणा बन सके कि ब्रिटिश भारत के शोषण के लिए नहीं बल्कि उस महान आर्य–संस्कृति को पुनर्जीवित करने आये हैं जिसे मुस्लिमों के बर्बर व हिंसक आक्रमण ने विकृत कर दिया है। उपर्युक्त विचार ने कहीं न कहीं ऊँची जाति के हिन्दुओं के अन्दर आर्यों की श्रेष्ठता और उनके योगदान सम्बन्धी विचार भरने के साथ ही महान आर्य पुनर्जागरण में ब्रिटिश सरकार की भूमिका को सकारात्मक दृष्टि से देखने का प्रयास किया।[6]

इस सिद्धांत का उच्च जाति के कुछ हिन्दुओं पर प्रभाव पड़ा, जो कि मुस्लिम शासन के दौरान अपने को वंचना की स्थिति में पा रहे थे। मुस्लिम व्यवस्था ने उन सभी को हीन स्थिति में कर दिया था जोकि पहले समाज की मुख्य भूमिका में थे। यहाँ तक कि कृषि और कामगार क्षेत्र से भी वे वंचित थे। ब्रिटिश–शासन ने उन्हें यह व्यवस्था परिवर्तित करने का अवसर व भौतिक समर्थन दिया, जबकि आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत ने इसे

वैचारिक समर्थन दिया। इस प्रकार इस सिद्धांत ने ऊँची जातियों को इस बात का कारण प्रदान करने की कोशिश की कि उन्हें अन्य भारतीयों के साथ अपना पहचान बनाकर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

अतः यह कहा जा सकता है कि जाने अथवा अनजाने में आर्य–आक्रमण के सिद्धांत ने भारतीय समाज के एक वर्ग को औपनिवेशिक शासन के पक्ष में प्रेरित करने का कार्य किया। यद्यपि औपनिवेशिक शासन के दुष्प्रभाव और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव में इसका अधिक प्रभाव नहीं देखने को मिला परन्तु उत्तर–औपनिवेशिक काल में भारतीय विद्वत वर्ग इस सिद्धांत को लेकर असमंजस की स्थिति में जरूर बना रहा।

अम्बेडकर द्वारा सिद्धांत का खंडन

19वीं शताब्दी के मध्य में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा गढ़े गये आर्य–आक्रमण सिद्धांत के इस नैरेटिव को ज्यादातर लोगों ने स्वीकार कर लिया कि आर्य बाहरी थे जो आकर यहाँ बस गये। इसको स्वीकारकरने वालों में विदेशियों के साथ–साथ अनेक भारतीय विद्वानों के नाम भी हैं। यहाँ यह बात समझने की आवश्यकता है कि जिस समय अम्बेडकर आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत के विरुद्ध अपने विचार प्रस्तुत कर रहे थे उस समय अन्य विद्वान चाहे वे सुधारवादी हों या पुनरुत्थानवादी, चाहे वे वामपंथी हों या दक्षिणपंथी, इस सिद्धांत के विरूद्ध कुछ कह पाने में सक्षम नहीं थे। यहाँ तक कि तिलक और स्वामी दयानंद जैसे पुनरुत्थानवादी भी इस सिद्धांत को बिना किसी प्रश्न किये स्वीकार कर चुके थे।[7] स्वामी दयानंद का मानना था कि आर्यों का मूल स्थान तिब्बत क्षेत्र है। जबकि बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक 'The Arctic Home in the Vedas' में आर्यों का मूल–स्थान आर्कटिक–क्षेत्र को माना है।[8] नेहरु ने भी अपनी पुस्तक 'Discovery of India' में आर्यों का मूल स्थान मध्य एशिया माना है।[9] इन सबसे अलग मत रखते हुए अम्बेडकर ने इस सिद्धांत को चुनौती दी और इसे भारतीय समाज को तोड़ने का ब्रिटिश साजिश का हिस्सा बताया। अंबेडकर ने अपनी पुस्तक 'Who were the Shudras?' में इस सन्दर्भ में अपने विचार विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किये हैं।

अम्बेडकर ने आर्य–आक्रमण सिद्धांत के अंतर्गत् शूद्रों के सन्दर्भ में दिए गये विचार को अस्वीकार कर दिया। उनका मत है कि– ''ब्राह्मण शास्त्रकारों से यह पता नहीं चलता कि शूद्र कौन थे और चौथा वर्ण कैसे बना?'' उनके अनुसार यह भ्रम पाश्चात्य विद्वानों ने फैलाया है कि आर्य बाहर से आए और उन्होंने यहाँ के मूल लोगों को पराजित कर शूद्र बनाया। वे इस मत का जबरदस्त खंडन करते हैं। उनका कहना है कि आर्य एक भाषा है। 'आर्य' शब्द का संबंध न रक्त से है, न शारीरिक ढाँचे से, न बालों से और न कपाल से है। जो आर्य भाषा बोलते हैं, वे ही आर्य हैं।[10]

उन्होंने ऋग्वेद को आधार बनाकर यह बताया है कि–'अर्य'शब्द का ऋग्वेद में 88 बार प्रयोग हुआ है। इसका प्रयोग चार विभिन्न अर्थों में किया गया है, जो ये हैं – (1) शत्रु, (2) संभ्रांत नागरिक, (3) भारत देश का नाम, और (4) स्वामी, वैश्य अथवा नागरिक।[11] इसी तरह 'आर्य' शब्द 31 बार आया है, जिसका अर्थ कहीं भी जाति नहीं है।[12] वे परिशिष्ट में इन दोनों शब्दों की संपूर्ण सूची भी प्रस्तुत करते हैं।[13]

आर्यों के समबन्ध में मूल प्रश्न जैसे कि, क्या आर्य बाहर से आए? वे भारत में कहाँ से आए? अर्थात् उनका मूल स्थान कहाँ था? आदि। इस संबंध में विद्वानों ने विभिन्न तरह के विचार व्यक्त किए हैं। परन्तु उनसे भिन्न विचार रखते हुए अंबेडकर ने इन सभी विचारों को भ्रामक बताया है। तिलक के इस विचार को कि आर्य आर्कटिक क्षेत्र के रहने वाले थे, अंबेडकर ने यह कहकर खारिज कर दिया कि आर्कटिक क्षेत्र में 'घोड़ा' विद्यमान नहीं था, जो आर्यों का प्रिय प्राणी था।[14]

एक अन्य आधार प्रस्तुत करते हुए अंबेडकर लिखते हैं कि – ''वैदिक साहित्य से पता नहीं चलता कि आर्य बाहर से आए। उन्होंने ऋग्वेद के मंत्र 75 का उल्लेख किया है, जिसमें सात नदियों का प्रसंग महत्वपूर्ण है। वहाँ नदियों का संबोधन 'मेरी गंगा', 'मेरी यमुना' और 'मेरी सरस्वती' कहकर किया गया है। अंबेडकर सवाल करते हैं कि कोई भी विदेशी ऐसा संबोधन क्यों करेगा? उनके अनुसार, ऐसा संबोधन वही कर सकता है, जिसका इन नदियों से निकट का भावात्मक संबंध हो।[15]

अंबेडकर आगे कहते हैं कि –वेदों में दासों, दस्युओं और आर्यों के बीच किसी बड़े युद्ध का वर्णन नहीं मिलता, केवल छोटी–छोटी झड़पों का उल्लेख मिलता है। यह जय–पराजय का प्रमाण नहीं हो सकता। उनके अनुसार, ऋग्वेद के मंत्रों (6–33–3, 7–83–1, 5–51–9 तथा 10–102–3) में स्पष्ट कहा गया है कि आर्यों के साथ दास और दस्युओं ने मिलकर संयुक्त रूप से शत्रु से युद्ध किया। वे कहते हैं कि संघर्ष की स्थिति के बावजूद दासों, दस्युओं और आर्यों में शांति बनाए रखने के लिए सम्मानजनक समझौते भी हुए हैं। वे आगे लिखते हैं कि ऋग्वेद के अनुसार, यदि संघर्ष था भी, तो वह जाति के आधार पर नहीं, धर्म के आधार पर था। ऋग्वेद के मंत्र (10–22–8) में कहा गया है कि हम दस्यु जातियों के बीच रहते हैं। ये लोग न तो यज्ञ करते हैं और न किसी की पूजा। उनके संस्कार–अनुष्ठान भी भिन्न हैं। अतः वे मनुष्य कहलाने योग्य नहीं हैं। हे शत्रु–हंता! इन दस्युओं का नाश करो।[16] अतः अंबेडकर कहते हैं कि– "ऋग्वेद के आधार पर इस मत का खंडन हो जाता है कि आर्य बाहर से आए और उन्होंने यहाँ के मूल निवासियों को जीता।[17]

इस विषय पर उत्तरोत्तर विचार करते हुए अंबेडकर ने यह बताने का प्रयास किया है कि, क्या दास या दस्यु नाम की कोई जाति थी? जो लोग आर्यों का दासों और दस्युओं से संघर्ष मानते हैं, उनका मत है – कि ऋग्वेद में 'मृध्रावक' और 'अनास' दस्युओं के गुण बताए गए हैं और 'दास' को कृष्ण–वर्ण कहा गया है। अंबेडकर कहते हैं कि ऋग्वेद में 'मृध्रावक' शब्द चार मंत्रों (1–14–2, 5–32–8, 7–6–3, तथा 7–18–3) में आया है, जिसका अर्थ है, वह व्यक्ति जो गँवार है और अपरिष्कृत भाषा बोलता है। वे पूछते हैं कि क्या भाषा का गँवारूपन या अपरिष्कृत होना जाति–भिन्नता का साक्ष्य माना जा सकता है? वे आगे कहते हैं कि 'अनसा' शब्द ऋग्वेद के मंत्र (5–29–10) में आया है। सायण ने इसका अर्थ बिना

मुँह वाला अर्थात कटुभाषी किया है, जबकि मैक्समूलर ने इसे बिना नासिका वाला बताया है। इनमें सही अर्थ कौन सा है? अंबेडकर कहते हैं कि दरअसल ये दो अर्थ दो तरह से पढ़ने के कारण हैं। सायण ने इस शब्द को 'अन–असा' पढ़ा है, जबकि मैक्समूलर ने 'अन्नासा'। वे कहते हैं कि सायण का अर्थ सही है, क्योंकि दस्युओं को कहीं भी बिना मुँह या बिना नाक वाला नहीं बताया गया है। उनके अनुसार यह 'मृध्रावक' का ही पर्याय है। इससे यह तो साबित होता है कि दस्यु कटुभाषी थे, पर उनका एक भिन्न जाति होना साबित नहीं होता।[18]

आर्य आक्रमण सिद्धांत एक और विचार प्रस्तुत करता है कि आर्य गौर वर्ण के थे जबकि दास (स्थानीय निवासी) कृष्ण वर्ण के थे। इसे इंकार करते हुए अंबेडकर लिखते हैं कि– ऋग्वेद (मंत्र 6–47–21) में दासों को कृष्ण योनि का बतलाया गया है, परन्तु यह स्पष्ट नहीं होता कि यह शब्द लाक्षणिक रूप में प्रयोग हुआ है या शाब्दिक अर्थ में। यह भी पता नहीं चलता कि यह यथार्थ है या घृणा का प्रतीक। जब तक इन प्रश्नों का उत्तर न मिल जाए, तब तक, वे कहते हैं, यह मत स्वीकार करना संभव नहीं कि दासों को काले रंग की जाति का माना जाए।[19] इन प्रश्नों के समाधान के लिए वे ऋग्वेद के तीन मंत्रों को आधार बनाया है, जो इस प्रकार हैं–

1. ऋग्वेद (6–22–10) – ''हे वज्रि, तूने दासों को आर्य बनाया है, अपनी शक्ति से बुरे को अच्छा बनाया है। हमें भी वही शक्ति दो, जिनसे हम शत्रुओं पर विजय पा सकें।''
2. ऋग्वेद (10–49–3) – ''इंद्र कहते हैं– मैंने दस्युओं को आर्य संबोधन से वंचित कर दिया है।''
3. ऋग्वेद (1–15–108) – ''हे इंद्र, यह मालूम करो कि आर्य कौन हैं और दस्यु कौन हैं? इन दोनों को पृथक करो।''

अंबेडकर कहते हैं कि –इन मंत्रों से यह स्थापित होता है कि आर्यों और दासों तथा दस्युओं के बीच न जातीय भिन्नता थी और न शारीरिक। दास और दस्यु आर्य कहे जाते थे, इसीलिए इंद्र से कहा गया कि उन्हें आर्यों से पृथक किया जाए।''[20]

अतः अंबेडकर का मानना है कि – ''आर्य जाति का सिद्धांत अनुमान के सिवा कुछ नहीं है। यह डॉ. बोप के दार्शनिक विचारों पर आधारित है, जो उन्होंने 1835 ई. में प्रकाशित अपनी युगांतकारी पुस्तक *'कंपेरेटिव ग्रामर* में प्रकट किए हैं। इस पुस्तक में डॉ. बोप ने लिखा है कि – ''यूरोप की अधिकांश और एशिया की कुछ भाषाओं के पूर्वज एक ही थे। जिन भाषाओं की ओर डॉ. बोप ने संकेत किया है, वे भारत–जर्मन भाषाएँ कहलाती हैं। इन्हें समुच्चय रूप से आर्य भाषा कहा गया है, क्योंकि वैदिक भाषा आर्यों का उल्लेख करती है और वह भारत–जर्मन भाषा परिवार से संबद्ध है। यही मुख्य सिद्धांत आर्य जाति पर लागू है।''[21]

वे आगे कहते हैं कि–''इससे लोगों ने दो अनुमान लगाए – (1) जातियों की एकता और (2) यह प्रजाति आर्य जाति है। इन लोगों ने यह तर्क दिया कि यदि भाषाओं का उद्‌गम समान आनुवंशिक बोलियाँ हैं, तो ऐसी जाति रही होगी, जिसकी वह मातृभाषा रही हो और वह आर्य जाति की आर्य भाषा रही होगी।''वे कहते हैं कि इसी एक अनुमान से समान मूल–स्थान का अनुमान भी गढ़ा गया।[22] लेकिन सबसे नया अनुमान और अनुसंधान आर्यों के आक्रमण का सिद्धांत है, जिसको खोजने की जरूरत है। डॉ. अंबेडकर के अनुसार, पश्चिमी विद्वानों को इस कथन को सिद्ध करने के लिए पड़ी कि 'इंडो–जर्मन' ही मूल आर्यों के मूल प्रतिनिधि हैं। इनका मूल स्थान यूरोप बताया गया है। अंबेडकर कहते हैं कि केवल यह बताने के लिए कि आर्य भाषा भारत कैसे पहुँची, भारत में आर्यों के आगमन और आक्रमण के सिद्धांत को गढ़ा गया।''[23]

अंबेडकर के अनुसार पश्चिमी विद्वानों ने तीसरी कल्पना यह की कि आर्य एक श्रेष्ठ जाति है। इस मत का आधार यह विश्वास है कि– ''आर्य यूरोपीय जाति के थे और इस नाते वे एशियाई जातियों से श्रेष्ठ हैं। श्रेष्ठता की इस परिकल्पना को यथार्थ सिद्ध करने के लिए ही इस कहानी को गढ़ने की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि उन्हें पता था कि आक्रमण की बात कहने के सिवा आर्य जाति को श्रेष्ठ बताने का और तरीका नहीं है।''[24]

अंबेडकर आगे कहते हैं कि– ''योरोपीय विद्वानों ने यह तर्क भी गढ़ा कि योरोपीय जातियाँ गौर वर्ण होती हैं। चूँकि आर्य योरोपीय थे, इसलिए वे गोरे भी थे। वे एशियाई जातियों से इसलिए घृणा करते हैं, क्योंकि वे काले रंग की होती हैं। चूँकि ये योरोपीय विद्वान रंगभेदी थे, इसलिए उनके अनुसार वर्ण व्यवस्था रंगभेद का पर्याय थी।''[25] अंबेडकर ने इन सारी परिकल्पनाओं को निराधार और हास्यास्पद अटकलों पर आधारित बताया है। वे कहते हैं कि– ''यदि वर्ण व्यवस्था रंगभेद का पर्याय होती, तो जातीय भेदभाव का आधार रंग होता, न कि जाति और चारों वर्णों के चार ही रंग होने चाहिए थे।''[26]

अंबेडकर के मतानुसार आर्य जाति की उत्पत्ति का सिद्धांत एक पुरानी भ्रांति है, जिसका अंत बहुत पहले हो जाना चाहिए था, पर ब्राह्मणों ने इसका समर्थन करके इसे जन साधारण में प्रचलित कर दिया। वे कहते हैं कि– ''ब्राह्मणों ने दो कारणों से इसका समर्थन किया। पहला, इसलिए कि ब्राह्मण दो राष्ट्र के सिद्धांत में विश्वास रखता है। वह स्वयं को आर्यों का प्रतिनिधि मानता है और शेष हिंदुओं को अनार्य जातियों की संतान कहने से उसके श्रेष्ठ होने के अहम की पूर्ति होती है। वह आर्यों के बाहर से आने तथा अनार्य जातियों को विजित करने के सिद्धांत का समर्थन अब्राह्मणों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने के मकसद से करता है। दूसरा कारण यह है कि योरोपीय विद्वानों के वर्ण का अर्थ रंग को ब्राह्मणों ने आर्य सिद्धांत को जीवित रखने के लिए माना, क्योंकि वर्णभेद ही आर्य सिद्धांत का मूलाधार है।''[27]

क्या आर्य वास्तव में गौर वर्ण के थे और वर्णभेद के समर्थक थे? इसका उत्तर देने के लिए अंबेडकर ने ऋग्वेद का सहारा लिया है और इस विचार का खंडन किया है। वे लिखते हैं कि– ऋग्वेद के मंत्र (1–117–8) में प्रसंग है कि आश्विन ने श्यामा और रूसति से विवाह किया। श्यामा काली थी और रूसति गोरी। एक अन्य मंत्र (1–117–5) में आश्विन की स्तुति कुंदनवर्णा वंदना के उद्धार के लिए की गई है। किंतु ऋग्वेद के ही अन्य मंत्र

(9–3–9) में एक आर्य ने पिशांक रक्ताभ ताम्रवर्ण वाले गुणी पुत्र के लिए देवताओं की आराधना की है। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों के सृष्टा ऋषि दीर्घत्तमा थे, जो श्याम वर्ण के थे। मंत्र 10–31–11 के अनुसार आर्य ऋषि कण्व भी श्याम वर्ण के थे। अंबेडकर लिखते हैं कि– ''इन उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि आर्य न तो गोरे वर्ण के थे और न वर्णभेद के समर्थक थे।''[28]

अंबेडकर ऋग्वेद और अन्य शास्त्रों के अध्ययन के हवाले से स्पष्ट करते हैं कि– ''आर्यों की दो जनजातियाँ थीं, न कि एक। योरोपीय विद्वान जिस एक आर्य प्रजाति की बात करते हैं, ऋग्वेद में उसका प्रमाण नहीं मिलता। ऋग्वेद में दो भिन्न आर्य जातियों का वर्णन है।''[29] वे आगे कहते हैं कि–''दास, दस्यु और आर्य तीनों आर्य जाति के हैं और तीनों भारतीय हैं।''[30]

अंबेडकर ने अपनी रचना *"शूद्र कौन थे ? ये अस्पृश्य कैसे बने?"* में यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि शूद्र आर्य थे और वे क्षत्रिय थे। वे क्षत्रियों में इतने उत्तम और महत्वपूर्ण वर्ण के थे कि प्रचीन आर्यों के समुदाय में अनेक शूद्र तेजस्वी और बलशाली राजा थे। उन्होंने मैक्समूलर के सिद्धांत का खंडन करते हुए विस्तार से लिखा है कि– ''ऋग्वेद में पुरुष सूक्त एक क्षेपक है, जो चार वर्ण की बात करता है। उनके अनुसार वर्ण तीन थे और शूद्र दूसरे वर्ण क्षत्रिय से संबंधित थे।''[31] चौथा वर्ण कब बना और शूद्र उसमें कब ढकेले गए? इस पर अंबेडकर का मत है कि–''क्षत्रिय और ब्राह्मणों के संघर्ष के कारण चौथा वर्ण शूद्र बना। ब्राह्मणों ने उनका उपनयन बंद कर उन्हें शूद्र बनाया। ब्राह्मणों की यह प्रतिक्रिया शूद्र राजाओं के द्वारा उनके साथ किए गए अत्याचार, उत्पीड़न और अपमान के कारण थी, जिसका आशय था प्रतिशोध की भावना।''[32]

प्रश्न उठता है कि शूद्रों ने इस अधोपतन को कैसे सहन किया? इसका उत्तर अंबेडकर यह देते हैं कि – ''उनकी संख्या कम थी और वे ब्राह्मणों द्वारा अपने विरुद्ध गठित संयुक्त मोर्चे का विरोध करने में असमर्थ थे।''[33]

अपने निष्कर्ष में अंबेडकर ने एक बड़ी महत्वपूर्ण बात यह कही है कि आर्य शूद्र और आज के हिंदू शूद्र एक नहीं हैं। धर्म सूत्रकारों ने सच्छूद्र (सभ्य शूद्र) और असच्छूद्र (असभ्य शूद्र) के रूप में शूद्र में अंतर किया है। उनके अनुसार सभ्य शूद्र निर्वासित शूद्र थे, जो गाँव के भीतर रहते थे और असभ्य शूद्र अनिर्वासित शूद्र थे, जो गाँव से बाहर रहते थे। आर्य शूद्र एक जाति (वंश या कुल) का नाम था, जबकि हिंदू समाज में 'शूद्र' शब्द तथाकथित नीच अथवा असभ्य मानव वर्ग के लिए प्रयुक्त गुणवाचक संज्ञा है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि अम्बेडकर द्वारा इस सन्दर्भ में किया गया अध्ययन वर्तमान में अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने अपनी पुस्तक में जो भी विचार प्रस्तुत किये हैं, उनके विरुद्ध तर्क ढूँढ पाना अत्यंत कठिन है। वर्तमान में इतिहास, राजनीति के शोधों व जीन सम्बन्धी अध्ययन (Genetic Study) ने अम्बेडकर के दावे को अधिक मजबूत किया है तथा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि आर्य–आक्रमण का सिद्धांत कमजोर तथ्यों पर आधारित सिद्धांत है जो सुनियोजित षड़यंत्र हेतु गढ़ा गया है।[35]

सिद्धांत के खंडन का सामाजिक समावेशन में योगदान

सामाजिक समावेशीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत् समाज के सभी व्यक्तियों व वर्गों को समाज में हर प्रकार की भूमिका सुनिश्चित करने का अवसर प्राप्त होता है। दूसरे अर्थों में, समाज के कुछ लोगों अथवा वर्गों जिनके साथ किसी भी आधार पर भेदभाव करते हुए समाज की मुख्यधारा से अलग रखा गया तथा उन्हें विविध सामाजिक और आर्थिक सुविधाओं से वंचित रखा गया, ऐसे लोगों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करते हुए उन्हें उनके सामाजिक और आर्थिक विकास के समान अवसर प्रदान करने की प्रक्रिया सामाजिक–समावेशन कहलाती है।[36]

"Social inclusion is the process of improving the terms on which individuals and groups take part in society—improving the ability, opportunity, and dignity of those disadvantaged on the basis of their identity."

– World Bank

Source:https://www.worldbank.org/en/topic/social-inclusion

भारत के सन्दर्भ में जब हम समावेशन की बात करते हैं तो हमें निराशा हाथ लगती है, क्योंकि भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा जातीय भेदभाव का शिकार होकर हजारों वर्षो से समाज की मुख्य धारा से कट गया। इस कारण उसके विकास के मार्ग बंद कर हो गये तथा समस्त सामाजिक और आर्थिक संसाधनों से यह वर्ग को वंचित हो गया। दूसरे शब्दों में कहें तो, यह वर्ग पूर्ण रूप से सामाजिक–बहिष्कार (Social Exclusion) का शिकार रहा। उपर्युक्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का भारतीय समाज पर भयानक दुष्परिणाम देखने को मिला। मुख्यधारा से कटने के कारण समाज के अन्य लोग और इस वंचित समाज के बीच अन्तराल लगातार बढ़ता चला गया। कालांतर में पश्चिमी इस्लामिक आक्रमण ने इस वर्ग के लिए और भी अधिक अमानवीय स्थिति उत्पन्न कर दी। इस काल में ही मैला ढोने जैसी अमानवीय प्रथा के प्रारंभ होने के साक्ष्य मिलते हैं। वहीं दूसरी तरफ जबरदस्ती धर्मान्तरण जैसी यातनाएं भी इस दौर में भारतीय समाज को झेलनी पड़ीं। आगे औपनिवेशिक काल विशेषकर ब्रिटिश शासन में इस बढ़े हुए सामाजिक अंतराल का लाभ उठाने का प्रयास किया गया। इसी पृष्ठभूमि में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा आर्य–आक्रमण सिद्धांत गढ़ा गया, जिससे कि समाज के वंचित वर्ग और अन्य के बीच उपस्थित अन्तराल और इससे जनित असंतोष को स्थायी रूप दिया जा सके।

अम्बेडकर इस औपनिवेशिक षड्यंत्र को भली–भांति समझ चुके थे। अतः उन्होंने आर्य–आक्रमण सिद्धांत के विरुद्ध अपना शोध–अध्ययन मात्र इसलिए नहीं किया कि वे इसके माध्यम से यूरोपीय श्रेष्ठता के सिद्धांत को गलत साबित कर सकें। उनका उद्देश्य मात्र यहाँ तक भी सीमित नहीं था कि वे दलित समाज के लोगों को आर्य संस्कृति का हिस्सा बताएं। बल्कि वे इस बात से अवगत थे कि आर्य–आक्रमण सिद्धांत के दीर्घकालिक दुष्परिणाम क्या होंगे। चूँकि अम्बेडकर ने तत्कालीन समय में अंग्रेजों द्वारा आर्य–आक्रमण सिद्धांत को अस्त्र बनाकर

भारत को तोड़ने के षड्यंत्र का प्रभाव देखा था। तत्कालीन समाज में इस सिद्धांत ने समाज के विघटन में जो भूमिका निभाई, उससे अम्बेडकर कहीं न कहीं चिंतित थे। उन्हें इस बात का भय था कि यह विष धीरे–धीरे पूरे भारतीय समाज रूपी शरीर पर पड़ेगा और तब इसे रोक पाना असंभव सा होगा। इसलिए अम्बेडकर नहीं चाहते थे कि देश की वे विघटनकारी शक्तियां जो 1947 में अपने उद्देश्य में असफल हो गई थीं, इस सिद्धांत को अस्त्र बनाकर भारत को खंड–खंड करने के अपने उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास करें। वर्तमान में इस सिद्धांत (आर्य–आक्रमण सिद्धांत) का प्रयोग अनेक ऐसे संगठनों द्वारा किया जा रहा है जो स्वयं अम्बेडकरवादी होने का दावा करते हैं, परन्तु अम्बेडकर के रास्ते पर चलने के बजाय, या तो उनके विपरीत चल रहे हैं या अम्बेडकर के विचार का चयनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए उसका अवसरवादी प्रयोग कर रहे हैं। अर्थात् उनके द्वारा आर्य–आक्रमण सिद्धांत का प्रयोग कर समाज में विघटन उत्पन्न करने का प्रयास किया जा रहा है। मूलनिवासी आन्दोलन, भीम सेना का आन्दोलन इसी प्रकार के संगठन व आन्दोलन के उदाहरण हैं।

अम्बेडकर ने कभी भी दलित विषय को आधार बनाकर राजनीतिक महत्वाकांक्षा को नहीं पाला। उनके लिए राजनीति समाज के वंचितों के उत्थान का साधन थी। यदि अम्बेडकर चाहते तो इस आर्य–आक्रमण सिद्धांत की सत्यता का परीक्षण करने के बजाय स्वीकार कर उसका राजनीतिक लाभ ले सकते थे। परन्तु उनके लक्ष्य (समाज के वंचितों का कल्याण) की कीमत विघटित समाज नहीं था। ब्रिटिश ने इस बात के लिए अम्बेडकर को प्रभावित करने का प्रयास भी किया कि वे जिन्ना की भांति एक अलग राष्ट्र की मांग (दलितों हेतु) करें, परन्तु अम्बेडकर ने इसे दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। उन्होंने अपनी राष्ट्रनिष्ठा को प्रस्तुत करते हुए कहा कि मुझे भारत भूमि से प्रेम है और विघटित भारत मुझे किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं है। वे एक अखंडित भारत चाहते थे; एक ऐसा भारत जिसकी सीमाएं इतनी विशाल हों जितनी अशोक और कनिष्क के काल में थीं।[37]

अध्ययन का उद्देश्यः

इस शोध–अध्ययन का उद्देश्य 'आर्य–आक्रमण सिद्धांत' के सन्दर्भ में अम्बेडकर के विचारों से अवगत होना है तथा इस सिद्धांत के सन्दर्भ में अम्बेडकर के विचारों की सामाजिक–समावेशन के क्षेत्र में भूमिका का पता लगाना है।

निष्कर्ष

निश्चित तौर पर अम्बेडकर को समाज में व्याप्त जातिगत असमानता से शिकायत थी परन्तु वे इसका स्थायी व तार्किक समाधान चाहते थे और इस सम्बन्ध में वे तनिक भी झुकने को तैयार नहीं थे। अतः एक दृष्टि से देखा जाये तो आर्य–आक्रमण सिद्धांत के विरुद्ध अम्बेडकर का दृष्टिकोण भारतीय समाज की एकता और अखंडता के क्षेत्र में महान देन है। क्योंकि अम्बेडकर एक ऐसा समाज चाहते थे जो समरसता पर आधारित हो जिसमें सभी मनुष्यों के साथ मनुष्यता के आधार पर व्यवहार किया जाय न कि उनकी जाति के आधार पर। अतः अम्बेडकर ने आर्य–आक्रमण सिद्धांत का खंडन कर भारतीय समाज में फैले जातिगत वैमनस्य (सवर्ण और अवर्ण), स्थानीय व बाहरी का वैमनस्य (आर्य बनाम द्रविण) को समाप्त करने का प्रयास है। अतः अम्बेडकर के इस विचार के माध्यम से यह स्थापित करने में सहायता मिलेगी कि पूरा भारतीय समाज एक ही मूल, एक ही अतीत और एक ही संस्कृति को परिलक्षित करता है तथा इसमें किसी प्रकार का भेद नहीं है। इस प्रकार अम्बेडकर का यह विचार भारतीय समाज के समावेशन के रूप में मानवता की बहुत बड़ी सेवा है।

अंत टिप्पणी

1. *https://www.huffingtonpost.com/rajiv-malhotra/how-europeans-misappropri_b_837376.html#*
2. *Sharma, Arvind. "Dr. B. R. Ambedkar on the Aryan Invasion and the Emergence of the Caste System in India." Journal of the American Academy of Religion 73, no. 3 (2005): 843-70. http://www.jstor.org/stable/4139922*
3. *वही*
4. *वही*
5. *वही*
6. *वही*
7. *Thapar, Romila. "The Theory of Aryan Race and India: History and Politics." Social Scientist 24, no. 1/3 (1996): 3-29. doi:10.2307/3520116.*
8. *वही*
9. *वही*
10. *डॉ. अंबेडकर संपूर्ण वाङमय, खंड – 13, डॉ. अंबेडकर प्रतिष्ठान, कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, संस्करण जून 1998, पृष्ठ–43*
11. *वही, पृष्ठ–47.*
12. *वही, पृष्ठ–47*
13. *वही, पृष्ठ–171*
14. *वही, पृष्ठ–51*
15. *वही, पृष्ठ–52*
16. *वही, पृष्ठ–52–53*
17. *वही, पृष्ठ–53*
18. *वही, पृष्ठ–53–54*
19. *वही, पृष्ठ–54*
20. *वही*
21. *वही, पृष्ठ–55*
22. *वही*
23. *वही*
24. *वही*
25. *वही, पृष्ठ–55–56*
26. *वही, पृष्ठ–56*
27. *वही, पृष्ठ–56–57*
28. *वही, पृष्ठ–57–58*
29. *वही, पृष्ठ–76*
30. *वही, देखिए अध्याय 6, शूद्र और दास*
31. *वही, पृष्ठ–112*
32. *वही, देखिए अध्याय 10 और 11*
33. *वही, पृष्ठ–164*

34. *वही, पृष्ठ–163*
35. *http://indiafacts.org/aryan-invasion-myth-21st-century-science-debunks-19th-century-indology/*
36. *https://assets.publishing.service.gov.uk/government/uploads/system/uploads/attachment_data/file/359358/socinc.pdf*
37. *Kardam, Jai Praqkash. (2009). Dr. Ambedkar: Dalit aur Bauddh-Dharm. Nav Bharat Prakashan.*
38. *Thorat, Sukhadeo. BR Ambedkar: Perspectives on social exclusion and inclusive policies. Oxford University Press, USA, 2008.*
39. *Ambedkar, Bhimrao Ramji. Who were the Shudras?.Vol. 1. Ssoft Group, INDIA, 2014.*
40. *Kuz'mina, E. E., and J. P. Mallory, eds. Origin of the Indo-Iranians, The. Leiden Indo-European Etymological Dictionary Series.BRILL, 2007.*
41. *Ambedkar, Bhimrao Ramji. Untouchables: Who were they and why they became untouchables. Amrit Book Company, New Delhi, 1948.*
42. *http%//www-archaeologyonline-net/artifacts/aryan&invasion&theories*
43. *https%//www-gktoday-in/academy/article/the&original&home&of&aryans controversy/*
44. *https%//en-wikipedia-org/wiki/Aryan_invasion_theory*
45. *https%//en-wikipedia-org/wiki/Indo&Aryan_migration*
46. *http%//www-dnaindia-com/india/report&new&research&debunks&aryan&invasion&theory&1623744*
47. *https%//www-thehindu-com/sci&tech/science/how&genetics&is&settling&the&aryan&migration&debate/article19090301-ece*
48. *https%//www-esamskriti-com/e/History/Indian&History/Debunking&the&Aryan&Invasion&theory&1-aspÛ*
49. *https%//timesofindia-indiatimes-com/india/Aryan&Dravidian&divide&a&myth&Study/articleshow/5053274-cms*
50. *http%//www-archaeologyonline-net/artifacts/white&invasion&aryan&theory*
51. *https%//defence-pk/pdf/threads/genetic&study&shows&the&theory&of&indo&aryan&invasion&is&a&myth-153161/*
52. *https%//en-wikipedia-org/wiki/Lalji_Singh*
53. *https%//www-worldbank-org/en/topic/social&inclusion*
54. *https%//www-researchgate-net/publication/312495996/download*